प्रश्न: संज्ञानात्मक मानव शास्त्र क्या है? वर्णन करें.

उत्तर: संज्ञानात्मक मानव शास्त्र सांस्कृतिक मानवशास्त्र की एक उपशाखा है. यह मानव शास्त्र की अपेक्षाकृत एक नई शाखा है. इसकी शुरुआत1955-1960 के आसपास हुई. यह शाखा मानव विचारों एवं मानव संस्कृतियों के बीच के संबंध को समझने का प्रयास करती है. यह विज्ञान इस विचार का समर्थक है कि प्रत्येक संस्कृति में घटनाओं एवं भौतिक जीवन को संगठित एवं सुव्यवस्थित रूप से समझने के अपने विशिष्ट प्रतिमान होते हैं. इन्हीं प्रतिमानो के आधार पर प्रत्येक सांस्कृतिक समूह भौतिक वस्तुओं, घटनाओं एवं अनुभवों का विश्लेषण करता है. संज्ञानात्मक मानव शास्त्र का मुख्य उद्देश्य लोगों के मस्तिष्क में विचारों एवं ज्ञान को ढूंढ कर उसका विश्लेषण करना है. संज्ञानात्मक मानव शास्त्री इस विचार पर एकमत हैं कि संस्कृति विचारों एवं व्यवहारों की संगठित व्यवस्था है. संज्ञानात्मक मानव शास्त्र संस्कृति की व्याख्या नहीं करते वरन् मानसिक पद्धतियों को समझने का प्रयास करते हैं जिसके अनुसार यह मानव मस्तिष्क में संरक्षित एवं संगठित होती है.

संज्ञानात्मक मानव शास्त्र का अन्य विषयों से भी संबंध है. यह मुख्यतः मनोविज्ञान के संज्ञानात्मक सिद्धांतों से प्रभावित है. इसके अलावा मानव शास्त्रियों ने इसमें भाषा विज्ञान ,संरचनावाद के सिद्धांतों एवं तकनीकों का भी प्रयोग किया है.

अपनी प्रारंभिक यात्रा में संज्ञानात्मक मानव शास्त्र ने भाषा विज्ञान के कई महत्वपूर्ण सिद्धांतों एवं तकनीकों का प्रयोग संस्कृति को समझने के लिए किया. शुरुआत में इसे "नव एथनोग्राफी, इथनो साइंस तथा इथनो लिंग्विस्टिक" नामों से भी जाना जाता था. इसके विकास का श्रेय उन विद्वानों को जाता है जो फ्रेंच बोआस के सिद्धांतों से असहमत थे.

भाषा विज्ञान के जिन महत्वपूर्ण तकनीकों का प्रयोग संज्ञानात्मक मानव शास्त्र में किया जाता हैउनमें से प्रमुख हैं...

1. केनेथ पाइक का एटिक एवं एमिक दृष्टिकोण

2. सापिर ह्वर्फ परिकल्पना

1. **एमिक- एटिक दृष्टिकोण:** केनेथ पाइक ने भाषा विज्ञान में प्रचलित फोनेटिक्स एवं फोनोंमिक्स से एटिक एवं एमिक को अलग कर संज्ञानात्मक मानव शास्त्र में प्रयोग किया है. पाईक के अनुसार मानव शास्त्र में

PREPARED BY DR. SHAH

Scanned with CamScanner

प्रचलित सहभागी अवलोकन तकनीक की व्याख्या एटिक एवं एमिक के आधार पर की जा सकती है. एटिक दृष्टिकोण का संबंध असहभागी अवलोकन से है, जिसमें अवलोकनकर्ता अपनी समझ एवं विचारों के आधार पर किसी भी संस्कृति का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है. दूसरी तरफ एमिक दृष्टिकोण सहभागी अवलोकन तकनीक पर आधारित है. शोधकर्ता समूह का सदस्य बनकर संस्कृति को उसके वास्तविक स्वरूप मेंसमझने का प्रयास करता है. इससे पार सांस्कृतिक समझ बढ़ती है.

पाइक ने संस्कृति के अध्ययन के लिए एमिक एवं एटिक दोनों दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण बतलाया है लेकिन एमिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी है.

2.सापिर ह्वर्फ परिकल्पना: संज्ञानात्मक मानव शास्त्र में इस परिकल्पना का विशेष महत्व है. सापिर एवं ह्वर्फ ने होपी जनजाति की भाषा एवं स्टैंडर्ड एवरेज यूरोपियन भाषा का तुलनात्मक अध्ययन कर भाषा एवं संस्कृति के आंतरिक रचना में सहसंबंध को तलाशने का प्रयास किया था.

उनके अनुसार प्रत्येक भाषा का उसको बोलने वाले समुदाय में विशेष महत्व होता है, क्योंकि समुदाय के लोग अपनी दुनिया को भाषा के द्वारा ही जानते समझते हैं. विभिन्न वस्तुओं एवं सांस्कृतिक घटनाओं का विवरण अपनी विशिष्ट शब्दों द्वारा करते हैं. अतःप्रत्येक भाषा अपनेआप में विशिष्ट है तथा किसी दो भाषा की तुलना संभव नहीं है. इसे ""**भाषाई सापेक्ष बाद** की संज्ञा दी जाती है.

इसी सिद्धांत के संदर्भ में संज्ञानात्मक मानव शास्त्रियों ने संस्कृति को विश्लेषण किया है. उनके अनुसार जैसे भाषा की एक निश्चित संरचना होती है उसी प्रकार प्रत्येक संस्कृति की भी संरचना होती है. विभिन्न संस्कृतियाँ अपनी-अपनी घटनाओं वस्तुओं को भिन्न-भिन्न ढंग से संरचित करती है. इसके कारण विभिन्न संस्कृतियों में संगठनात्मक एवं संरचनात्मक भिन्नता पाई जाती है. यही कारण है कि प्रत्येक संस्कृति विशिष्ट होती है

इन तकनीकों के अलावा इस शाखा के विद्वानों ने **" घटक विश्लेषण तकनीक"(componential analysis technique)** का भी विकास किया है. इस तकनीक के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों में घटनाओं, वस्तुओं एवं व्यवहारों के लिए प्रयोग होने वाले शब्दों का लोक वर्गीकरण समझने की कोशिश की जाती है. यह वर्गीकरण जीव विज्ञान में प्रचलित वर्गीकरण से प्रभावित है. इसमें वस्तुओं, घटनाओं एवं व्यवहारों का सांस्कृतिक आधार पर वर्गीकरण किया जाता है.

इस पद्धति का प्रयोग कर संज्ञानात्मक मानव शास्त्रियों ने लोगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न शब्दों एवं वाक्यों का विश्लेषण कर उन में छुपे अर्थ के आधार पर संस्कृति को समझने का प्रयास किया है. इन मानव शास्त्रियों में प्रमुख नाम है...हैराल्ड कांकलिन,वार्ड गुड एनफ तथा चार्ल्स फ्रेंक .

PREPARED BY DR. SHAHI KIRAN

Scanned with CamScanner

जार्ज गुड एनफ: संज्ञानात्मक मानव शास्त्रियों में गुड एनफ का नाम अग्रणी माना जाता है. उन्होंने 1957 में संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा कि" **एक समाज की संस्कृति में कुछ भी होता है वह उसके सदस्यों को स्वीकार्य तरीके से संचालित करने के लिए जानना या मानना होता है. संस्कृति एक भौतिक घटना नहीं है. संस्कृति व्यवहारों, वस्तुओं या भावनाओं का समूह नहीं है वरन यह इन सभी का एक संगठन है,जो लोगों के दिमाग में होता है. इस प्रकार संस्कृति एक मानसिक प्रक्रिया है."**

गुड इनफ के परिभाषा के बाद संज्ञानात्मक मानव विज्ञान में प्रयोग शुरू हो गए. उन्होंने घटक विश्लेषण पद्धति द्वारा नातेदारी शब्दावली का अध्ययन किया था. उनका यह अध्ययन "चूउक" जनजाति पर था. चूउक संयुक्त राज्य अमेरिका के माइक्रोनेशिया राज्य के निवासी हैं. यह एक मातृसत्तात्मक समाज है जो "क्रो नातेदारी शब्दावली" प्रणाली का प्रयोग करते हैं. इसका अध्ययन कर गुड एनफ ने चौकीस लोगों की संस्कृति को समझने का प्रयास किया है.

हैराल्ड कांकलिन: इन्होंने "घटक विश्लेषण तकनीक" के माध्यम से फिलीपींस के "हानुनू" जनजाति के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले रंगो के वर्गीकरण का अध्ययन किया था. अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि हानुनू ने रंगो को चार भागों में वर्गीकृत किया है.....

1. मा-बिरु

2. मा -लाटू

3.मा-रारा

4.मा-लागटी

हानुनू जनजाति सभी रंगों को इन्हीं चार वर्गों में विभाजित करती है. मा -लाटू ऐसे रंगों के लिए प्रयोग किया जाता है जिसमें हरापन होता है, उसी प्रकार मा-बिरू उन सभी रंगो के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसमें गहरापन होता है जैसे काला, भूरा, बैगनी इत्यादि. हल्के रंगों के लिए मा-लागटी शब्द का प्रयोग किया जाता है सफेद, हल्का गुलाबी हल्का नीला इत्यादि. मा-रारा के अंतर्गत लालिमा वाले रंग आते हैं ऐसे लाल, नारंगी इत्यादि. उन्होंने हानुनू के इस रंग वर्गीकरण का तुलनात्मक अध्ययन अमेरिका में प्रचलित रंग वर्गीकरण से किया था और यह पाया की विभिन्न सांस्कृतिक समूहों में रंगो को पहचानने की विभिन्न व्यवस्था होती है क्योंकि इन संस्कृतियों में भाषाई वर्गीकरण की भिन्न पद्धति प्रचलित होती है.

चार्ल्स फ्रेक: इन्होंने फिलीपींस के "Mindano" में रहने वाले सुबानु जनजाति पर अपना अध्ययन किया था.

PREPARED BY DR.SHAHI KIRAN

Scanned with CamScanner

इन्होंने घटक विश्लेषण तकनीक के माध्यम से सुबानु में चर्म रोगों के लिए प्रचलित शब्दों का अध्ययन किया था .सुबानु के वर्गीकरण में चर्म रोगों के कई प्रकार हैं...जैसे नुका,समाद,पासुर.इन सभी के अलग अलग अर्थ है.एक बाह्य अवलोकनकर्ता के लिए यह सभी चर्म रोग है परंतु सुबानु के लिए यह सभी अलग-अलग हैं.इसलिए इन्हें अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है.रोगों का यह वर्गीकरण सुबानु संस्कृति में रोग उपचार की दिशा में एक संज्ञानात्मक कदम है जिसके द्वारा यह बीमारियों की पहचान तथा उपचार करते हैं.

इस प्रकार हम देखते हैं कि संज्ञानात्मक मानवविज्ञान संस्कृति की व्याख्या मानसिक समझ के आधार पर करता है.यह संस्कृति को एक घटना मानता है और इसके विश्लेषण के लिए व्यक्ति की विचार प्रणाली को समझने की पैरवी करता है.यह पार सांस्कृतिक तुलना पर जोर देता है.

संज्ञानात्मक मानव विज्ञान को अनेक आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है.मानव शास्त्री इसे उद्विकास विरोधी तथा तुलनात्मक विरोधी मानते हैं.यह सूचना दाताओं के ऊपर तथा एमिक दृष्टिकोण पर अति आश्रित है जिससे अध्ययन का परिणाम दोषपूर्ण हो सकता है.इसके बावजूद भी संज्ञानात्मक मानव विज्ञान का सांस्कृतिक अध्ययन में विशेष महत्व है.

PREPARED BY DR.SHAHI KIRAN

Scanned with CamScanner